IJAER/November-December 2018/Volume-7/Issue-3 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

गांधीवादी विचारधारा की वर्तमान में प्रांसगिकता

डॉ. विश्वजीत सिंह,
सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, डी.ए.वी. कॉलेज, पूण्डरी (कैथल)
rana.vishavjeet@gmail.com

सार–
गांधी एक व्यक्ति नही विचार है गांधी आज भी उतने ही प्रासंगिक है जितने वे अपने जीवनकाल में थे। आज हम गांधी को तो भूल रहे हैं और गांधीवाद के अनुयायी कहलाते है। गांधी–विचार से हम न केवल वर्तमान समस्याओं का समाधान कर सकते है बल्कि एक नई व्यवस्था की संरचना भी कर सकते हैं हम न केवल उनको भुलाते जा रहे हैं बल्कि उनके नाम की दुहाई देकर गलत काम करते ता रहें हैं आज उनको सच्ची श्रद्वांजली देने के लिए यह आवश्यक है कि उनके विचारों को पुनः स्मरण कर उनको जीवन में अपनाने का संकल्प लें। गांधीजी एक व्यक्ति नहीं बल्बि एक संस्था थे जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र नही था, जिस पर उन्होंने अपने विचार प्रकट नही किये हो। आज गांधीवाद के नही बल्कि गांधीजी के विचारों पर आचरण की आवश्यकता है। गांधीजी को सच्ची श्रद्वांजली यही होगी कि हम उनके विचारों को अपने जीवन में अपनाएं एव दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करें

गांधी एक व्यक्ति नही विचार है गांधी आज भी उतने ही प्रासंगिक हैए जितने वे अपने जीवनकाल में थे। आज हम गांधी को तो भूल रहे हैं और गांधीवाद के अनुयायी कहलाते है। गांधी–विचार से हम न केवल वर्तमान समस्याओं का समाधान कर सकते है बल्कि एक नई व्यवस्था की संरचना भी कर सकते हैं हम न केवल उनको भुलाते जा रहे हैं बल्कि उनके नाम की दुहाई देकर गलत काम करते ता रहें हैं आज उनको सच्ची श्रद्वांजली देने के लिए यह आवश्यक है कि उनके विचारों को पुनः स्मरण कर उनको जीवन में अपनाने का संकल्प लें। हमारे स्वतंत्रता–आंदोलन का इतिहास, जिसके विषय में कहा जा सकता है कि वह 1857 से 1947 तक अर्थात् 90 वर्ष चलता रहा–एक मनोहारी एवं महत्तवपूर्ण कहानी है। इस आंदोलन का गठन बहुत से तंतुओं द्वारा हुआ हैः हिन्दु समाज सुधारक जैसे राजाराम मोहनराय, देवेन्द्रनाथ टैगोर केशवचन्द्र सेन बंगान में, महाराष्ट्र में एम. जी. रानाडे और भंडारकर और पंजाब में दयानन्द सरस्वती; एक बहुमुखी राजनीतिक क्रिया जो बड़े स्तर पर दो दलों में विभाजित हो गई–एक मॉडरेटस; जो संवैधानिक एवं शान्तिपूर्ण प्रगति में विश्वास रखते हैं जिनमें जी. के. गोखले, दादाभाई नौरोजी, सर फिरोजशाह मेहता, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी और रासबिहारी बोस आदि; और दूसरे गण्यमान्य आतंकवादी व्यक्ति

थे–लोकमान्य तिलक, श्री अरविन्द घोष, विपिनचन्द्र पाल और लाला लाजपतराय। अंततः महात्मा गांधी के प्रतिनिधित्व में इन तीनों बिखरे तन्तुओं को एक सूत्र में बांधा गया जिससे राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन बड़ी तीव्रता से विजय–निष्कर्ष की ओर बढ़ निकला[1]। यह बात बड़े महत्व की है कि जहां महात्मा गांधीजी को एक अटल प्रतिबद्धता के अनुसार अहिंसा ने आंदोलन के अंतिम समय एक सार्थक 'रोल' अदा किया था, वहां उग्रवादियों तथा विप्लवकारियों ने कभी भी उनके विचारों को न अपनाया।[1]

गांधी एवम अंहिसा

गांधीजी का यह कहना था कि अहिंसा ऐसी शक्ति है, जिसे सब साध सकते है, अहिंसा को जीवन का नियम मान लेने पर यह सिर्फ व्यक्ति के कुछ कृत्यों पर ही लागू न हो अपितु सम्पूर्ण व्यक्तितव को अनुप्राणित करने वाली होनी चाहिए। गांधी जी के अनुसार अहिंसा के मार्ग का प्रथम कदम यह है कि हम अपने दैनिक जीवन में सहिष्णुता, सच्चाई, विनम्रता, प्रेम और दयालुता का व्यवहार करें। गांधी जी ने अहिसा के बारे में अपना मत व्यक्त करते हुए कहा कि अहिंसा की बात सभी धर्मो में है, लेकिन इसे सर्वोच्च अभिव्यक्ति हिन्दू धर्म में मिली है।[2] हिन्दू धर्म समस्त प्राणी जगत को एक मानता है उनका कहना था कि अहिंसा साधन है और सत्य साध्य, यदि हम साधन को ठीक रखें तो देर सवेर साध्य तक पहुॅच ही जाएगें। एक बार इस सूत्र को समझ जाए, तो अन्तिम विजय असंदिग्ध है।

भगतसिंह की फांसी की सजा रोकने के लिए महात्मा गांधी के प्रयास

महात्मा गांधी ने भी तत्कालीन वायसराय लार्ड़ इरविन से 1931 के ऐतिहासिक 'गांधी–इरविन समझौते' से पूर्व फरवरी–मार्च 1931 में हुई बातचीत में भगतसिंह, राजगुरू तथा सुखदेव की सजा बदलने का प्रश्न उठाया, परंतु वायसराय इससे सहमत न हुआ। भले उसे ऐसा करने का पूरा–पूरा अधिकार था, उसने इस विषय में विवशता प्रकट की।[3]

गांधी एवम सर्वोदय

गांधी के सर्वोदय का सिद्वान्त राज्य के लक्ष्य की अवधारणा से सम्बन्धित है। सर्वोदय का सिद्वान्त का शाब्दिक अर्थ है– सबकी भलाई, सबका कल्याण और सबका उत्थान।

गांधीजी एवम धर्म

गांधी जी एक अध्यत्मिक व्यक्ति थे। गांधी जी ने कहा मानव जाति की सेवा करके मै ईश्वर से साक्षात्कार का ही प्रयत्न करता हूॅ। उन्होंने कहा कि जब भी मेरे सामने कोई समस्या आती है तो मैने गीता का सहारा लिया ओर मझु उसी से सात्वना मिली।

गांधीजी एवम अर्थवयवस्था

गांधी जी चाहते थे देश आत्मनिर्भर बनें यह तभी सम्भव है जब स्वदेशी को अपनाया जाए, स्वदेशी उनका प्रथम एवम अन्तिम संदेश था। गांधी जी आधुनिकीकरण एवम मशीनीकरण के विरोधी नही थे इससे होने वाले दुष्परिणामों के विरोधी थे।[5]

गांधी एवम राष्ट्रवाद

गांधीजी एक सच्चे देशभक्त एवं राष्ट्रवादी थे? उनकी प्रसिद्व पुस्मक 'हिन्द स्वराज' में उनकी राष्ट्रवादिता, स्वदेशाभिमान और स्वदेशोद्वार की बात स्पष्ट रुप से देखी जा सकती है उन्ही के शब्दों में मैं मानता हूँ कि जो सभयता हिन्दुस्तान की है उस तक दुनिया में कोई नही पहुँच सकता, गांधी जी को श्रद्वाजलि देते हुए श्री कन्हेयालाल माणिक लाल मुंशी ने कहा 'गांधी जी ने भारत को एक राष्ट्र के रुप में संगठित किया, स्वाधीनता संग्राम का नेतृम्व किसा, उन्होंने दासो को मनुष्य बजाया और समाज से अस्पृश्यता का विनाश किया। उन्होंने भारतीयों में अपनी संस्कृति में अभिमान एवं अपनी शक्ति में विश्वास जागृत किया और उसे पुनः प्रतिष्ठित किया। भारत ने उनको 'राष्ट्रपिता' शब्द से सम्बोधित किया, जो उनकी राष्ट्र–भक्ति का घोतक है गांधी जी की राष्ट्रीयता संकीर्ण नहीं थी।

गांधीजी एक व्यक्ति नहीं बल्कि एक संस्था थे जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र नही था, जिस पर उन्होंने अपने विचार प्रकट नही किये हो। आज गांधीवाद के नही बल्कि गांधीजी के विचारों पर आचरण की आवश्यकता है। गांधीजी को सच्ची श्रद्वांजली यही होगी कि हम उनके विचारों को अपने जीवन में अपनाएं एव दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करें।

संदर्भ–ग्रंथ सूची :–

1. मनोज सिन्हा, गांधी अध्ययन, ओरियंट लॉगमैन, पृष्ठ नं. 10, नई–दिल्ली,2008
2. मोहन दास कर्मचन्द गांधी, नवजीवन ट्रस्ट अहमदाबाद, पृष्ठ नं. 99, 2008
3. सुमित्रा कुलकर्णी, अनमोल विरासत (गांधी व्यक्तित्व और विचार) पृष्ठ नं. 148 प्रभात प्रकाशन नई–दिल्ली,
4. मनोज सिन्हा, गांधी अध्ययन, दूसरा संस्करण ओरियंट लॉगमैन, पृष्ठ नं. 101, नई–दिल्ली, 2010
5. यू॰एस॰मोहनराव, महात्मा गांधी का सन्देश , दरियागन्ज, पृष्ठ नं. 74 नई दिल्ली